जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा लाडनूं में आयोजित
तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन सानन्द संपन्न

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य और साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के दिशा निर्देशन में लाडनूं में दिनांक 10-11-12 अगस्त, 2013 को संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में देशभर की 253 तेरापंथी सभाओं के लगभग 750 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में आचार्यश्री महाश्रमणजी सहित साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मंत्रीमुनि श्री सुमेरमलजी 'लाडनूं', शासन गौरव साध्वीश्री राजीमतीजी, साध्वीश्री कनकश्रीजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री राकेशकुमारजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री उदितकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी, मुनिश्री जयन्तकुमारजी, मुनिश्री जम्बूकुमारजी एवं महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया, उपाध्यक्ष श्री विनोद कुमार बैद, महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया, सहमंत्री श्री बजरंग कुमार सेठिया, श्री जी भूपेन्द्र मुथा, और सभाओं के अनेक प्रतिनिधियों ने विभिन्न सत्रों में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।

प्रतिनिधि सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का प्रारंभ पूज्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। चातुर्मास व्यवस्था समिति - लाडनूं के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र घोषल एवं तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल खटेड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। महासभा के उपाध्यक्ष श्री विनोद कुमार बैद ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में सम्मेलन की प्रस्तावना एवं इसके महत्व को दर्शाते हुए कहा कि सभाओं की प्रगति की समीक्षा करना, सुषुप्त सभाओं में जागृति लाना और सशक्त सभाओं को प्रगति के प्रति और सचेष्ट करना प्रारंभ से ही इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि देशभर में लगभग 511 सभाएं हैं जिनकी सार-संभाल होनी चाहिए।

महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू एवं प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्ष में एक बार महासभा द्वारा आयोजित प्रतिनिधि सम्मेलन में सभा प्रतिनिधियों का मिलन होता है तो अनेक प्रकार की जानकारियाँ, विचार विनिमय, मार्गदर्शन प्राप्त होता है। पूज्यप्रवर ने कहा कि यह सम्मेलन तेरापंथ समुदाय का सम्मेलन है और यह तेरापंथ के प्रति आस्था रखने वाले, सभा से जुड़े लोगों का होता है। हमारी दृष्टि में सभाओं का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ये विशिष्ट संस्थाएं हैं। तेरापंथी महासभा इनका देखरेख व मार्गदर्शन करती है।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में समागत महासभा व सभाओं के प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों की ओर इंगित करते हुए नियति और पुरुषार्थ के बारे में बताते हुए कहा कि कई बार ऐसा देखा जाता है कि पुरुषार्थ करने पर भी नियति के कारण सफलता नहीं मिलती है परंतु आदमी को पुरुषार्थवादी होना चाहिए, उसे पुरुषार्थ कभी छोड़ना नहीं चाहिए।

पूज्यप्रवर ने कहा कि समाज की अनेक गतिविधियाँ महासभा द्वारा संचालित होती है। महासभा के सभी कार्यकर्ताओं में कार्य के प्रति लगन व समर्पण की भावना है।

पूज्यप्रवर ने सहभागिता और सहयोग के बारे में पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने बताया कि सहभागिता में जितने लोग जुड़े होते हैं वे जिम्मेदारी के साथ जुड़ते हैं और सहयोगियों में जिम्मेदारी नहीं होती है। उन्होंने कहा कि संस्था को सहभागिता चाहिये। सहभागिता में जो अपनत्व होता है, जिम्मेदारी होती है वह सहयोग में नहीं होता। पूज्यप्रवर ने इस बात पर जोर दिया कि सहभागिता या सहयोग लेने की कला भी होनी चाहिए। इसके लिए मैत्री की भावना रखनी चाहिए, विश्वास की भावना होनी चाहिए जिससे दूसरे व्यक्ति भी स्वतः जुड़ जाते हैं। एक दूसरे को सहना चाहिए, कहना चाहिये और शांति से रहना चाहिए। ऐसी भावना होने से संस्था का कार्य सुचारु रूप से चलता है।

पूज्यप्रवर ने महासभा द्वारा आयोजित प्रतिनिधि सम्मेलन-2013 के समापन कार्यक्रम में उपस्थित संभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के सम्मेलनों में मिलन होने से एक स्फूर्ति आती है। अच्छे उद्देश्य के साथ मिलन निष्पत्तिदायक होती है। हमारे श्रावकों में अच्छी निष्ठा, श्रद्धा व लगन है। पूज्यप्रवर ने तीन प्रकार के कार्यकर्ताओं की व्याख्या करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं में अभय का विकास होना चाहिए, सहनशक्ति का विकास होना चाहिए और उसे पुरुषार्थवादी होना चाहिये।

साध्वीप्रमुखाश्री ने महासभा की स्थापना के बारे में बताते हुए कहा कि बाल दीक्षा प्रकरण के कारण महासभा अस्तित्व में आयी यह नियति का संयोग है। महासभा आज जिस मुकाम पर पहुंची है वह संघीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि बाल दीक्षा प्रकरण के समय एक अंग्रेज अधिकारी विलियम की प्रेरणा से तेरापंथ समाज में एक प्रतिनिधि संस्था का गठन हुआ जिसने आगे चलकर महासभा का रूप ले लिया। प्रमुखाश्री जी ने कहा कि संस्था एक होती है और काम करनेवाले अनेक होते हैं। उस संस्था को सफल माना गया है जो अपने मैनपावर का उपयोग करे। व्यक्ति को यह अहसास हो जाये कि उसने कार्य किया है उसमें कोई कमी नहीं है तो यह उसकी सफलता का प्रमाण है। काम करनेवाले सभी व्यक्तियों का समुचित उपयोग व महत्व होना चाहिए। अच्छे काम को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। बुरे काम में तत्काल निर्णय नहीं लेना चाहिए। सफलता साहस में है, आत्मविश्वास होना चाहिए। अपने बारे में, समाज के बारे में, अपनी जीवनशैली, परिवार की जीवनशैली, समाज की जीवनशैली के बारे में सकारात्मक सोच रखते हुए कार्य को गति प्रदान करनी चाहिए।

मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी ने धर्म की अनुपालना एवं उसकी प्रक्रिया के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि जब प्रत्येक कार्य धर्म के साथ एवं उसके अनुरूप होता है और जब कोई व्यक्ति अपनी प्रक्रिया को कायम रखकर आगे बढ़ता है तो वह सफल माना जाता है। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति अपने जीवन में सफल होना चाहता है और जिस उद्देश्य को लेकर कार्य करता है वह यदि धार्मिक प्रक्रियानुसार पूर्ण होता है तो उसे सफल कहा जाता है। इस प्रसंग को उन्होंने कुछ उदाहरण देते हुए विस्तृत रूप में स्पष्ट किया।

मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने कार्यकर्ता व नेतृत्वकर्ता की अर्हताओं के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बताया कि नेता वही हो सकता है जो अच्छा कार्यकर्ता रहा हो। नेतृत्वकर्ता में नेतृत्व का गुण होना चाहिए। कार्यकर्ता में कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता में सेवा भावना, तेरापंथ धर्मसंघ की मूलभूत जानकारी, तत्वज्ञान की जानकारी होनी चाहिए। नेतृत्वकर्ता में टांगखिंचाई की भावना नहीं होनी चाहिए, सेवा भावना, टीम वर्क की भावना। टीम को साथ लेकर चले। कार्यकर्ता को आगे रखकर चले। जहाँ कहीं संकट की स्थिति आये तो आगे आना चाहिए और क्रेडित के समय कार्यकर्ता को आगे रखना चाहिए।

मुनिश्री उदित कुमारजी ने ज्ञानशाला के संदर्भ में अपने प्रेरणादायी उद्‌बोधन में बताया कि हमारे मन में संघ के प्रति गौरव का भाव होना चाहिये। हमें संघ की मान्यता व परंपरा से अनभिज्ञ नहीं रहना चाहिये। जहां एक्य भाव होता है उस परिवार व समाज में एकता बनी रहती है। संघीय भावना व्यक्ति को आगे बढ़ाने वाली होती है। हमारे संघ की नींव त्याग, तपस्या, निष्ठा व समर्पण पर टिकी हुई है। सकारात्मक भाव से काम करते हुए संघ की सभी प्रवृत्तियों को कुशलतापूर्वक चलाना चाहिये और उन्हें संसाधन उपलब्ध कराया जाना चाहिये। आत्मीय भाव, सहयोग की भावना व सबको साथ लेकर चलें तो काफी अच्छा काम हो सकता है। मुनिश्री ने कहा कि जहाँ संघ का, संघीय कार्य का प्रश्न है वहाँ व्यक्तिगत ईच्छा, प्रश्न गौण हो जाता है। संस्था के अध्यक्ष का दायित्व होता है कि वह संस्था में चलने वाली प्रवृत्तियों का संचालन बन्द नहीं हो। जो प्रवृत्तियां हमें विरासत में मिली है उसे आगे बढ़ाये।

मुनिश्री जयन्त कुमारजी ने जैन विद्या पाठ्यक्रम व संस्कार निर्माण के बारे में विशेष जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि जैन विद्या का समुचित अध्ययन करने से ही वर्तमान व भावी पीढ़ी का स्वस्थ निर्माण संभव है। समण संस्कृति संकाय का यह प्रयास है कि आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में अधिकाधिक विद्यार्थी जैन विद्या परीक्षा में सम्मिलित हो ताकि इस शताब्दी वर्ष की सार्थकता सिद्ध हो सके।

मुनिश्री राकेशकुमारजी "सहयोगी नहीं सहभागी चाहिये" विषय पर अपना वक्तव्य प्रदान करते हुए बताया कि सभाओं के पदाधिकारियों को यह अहसास होना चाहिये कि हमारे उपर संघ का बड़ा उपकार है। अतः संघ के प्रति जागरूक रहना हमारा कर्तव्य होना चाहिये। सहभागी का तात्पर्य है कि हम संकुचित सोच नहीं रखें। हमारा कोई साधार्मिक भाई कष्ट में नहीं रहे, इसके लिए हमें अपना दृष्टिकोण बड़ा बनाना होगा। सभा

के अध्यक्ष/मंत्री नेता नहीं बल्कि समाज के सेवक हैं। सामुदायिक चेतना व भावना को जगाकर सबके समन्वय से स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकेगा।

शासन गौरव साध्वीश्री राजीमतीजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि संस्कृति की सुरक्षा नहीं होने से समाज टूटता है। संस्कारों के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में एवं अन्य सभी क्षेत्रों में हम सहभागी बनें। समाज का विकास और विस्तार कैसे हो इस पर चिंतन करना चाहिये। व्रत की चेतना, संयम की चेतना का विकास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि तेरापंथ समाज के आगे बढ़ने का प्रमुख कारण है साधार्मिक वात्सल्य, परस्पर सहयोग व सम्मान। अतःसभा के अध्यक्ष एवं मंत्री का अपने क्षेत्र के हर श्रावक से सम्पर्क होना चाहिए।

शासनश्री मुनिश्री किशनलालजी ने उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बनाकर प्रेक्षाध्यान का अभ्यास व विकास करना होगा। हमें राग-द्वेष से मुक्त होना चाहिये तभी अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है। जब तक व्रतदीक्षा में सहयोग नहीं करेंगे हमारा कल्याण नहीं होगा। सहयोग केवल आर्थिक नहीं होना चाहिये।

मुनिश्री जम्बू कुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि 5 नवम्बर 2013 से आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का प्रारंभ हो रहा है और 25 अक्टूबर 2014 को इसका समापन होगा। अतः सभी में मन, वचन और काया में एक ही धुन रहना चाहिये। उन्होंने कहा कि धुन का तात्पर्य है हम उनके नाम **"ओम जय तुलसी"** का स्मरण करें। मुनिश्री ने कहा कि यह महासभा का भी शताब्दी वर्ष है। काफी करणीय कार्य हैं। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी ने इंसानियत और मनुष्यता के लिए अणुव्रत आंदोलन प्रारंभ किया। गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक की यात्रा की। अतः इस वर्ष में अणुव्रत का खूब प्रचार-प्रसार होना चाहिये।अणुव्रत के संकल्प को स्वीकारें। कम से कम एक लाख अणुव्रत बनाने का प्रयास करें। अगर इस शताब्दी वर्ष में अधिक से अधिक अणुव्रत प्रचेता बनते हैं तो यह एक बड़ा काम हो सकता है। अणुव्रत संकल्प पत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। अतः अधिक से अधिक अणुव्रत के कार्य इस वर्ष हों इसके लिए हमें प्रयास करना होगा, संकल्पित होना पड़ेगा।

मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने तत्वज्ञान के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि सभा संस्था के पदाधिकारीगण वही बनें जिसमें तत्वज्ञान हो। उन्होंने कहा कि शरीर और आत्मा एक होता है। श्रावक अपने आप से यह जिज्ञासा करे कि वह एक है, उनकी पहचान एक है। व्यक्ति स्वयं की खोज करे और यह तभी संभव है जब उस व्यक्ति को तत्वज्ञान की जानकारी हो।

महासभा के अध्यक्ष एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संयोजक श्री हीरालाल मालू ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सन् 1988 से सभा प्रतिनिधियों का सम्मेलन प्रारंभ हुआ और तब से लेकर आज तक यह निरंतर सफलतापूर्वक आयोजित की जा रही है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में जो अनुशासन, मर्यादा है वह अन्य धर्मसंघ में नहीं है। अध्यक्ष महोदय ने सभा के लिए करणीय कार्यो के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने सभा संचालन के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि सभी सभाओं के संविधान में एकरूपता (महासभा द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार) होनी चाहिए, सभी सभाओं में 30 जून तक चुनाव हो जाने चाहिए, दो कार्यकाल के उपरान्त अध्यक्ष का चुनाव अवश्य होना चाहिए, समाज के अधिकाधिक व्यक्तियों को सभा का सदस्य बनाया जाना चाहिए।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने शताब्दी वर्ष में 100 दीक्षाएं, 100 अणुव्रत प्रचेता, एक लाख अणुव्रती बनाने, आचार्य तुलसी के नाम पर डाक टिकट एवं ट्रेन का नामकरण करवाने सहित अनेक करणीय कार्यों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि काफी सभाओं से संकल्प पत्र भरकर प्राप्त हुए हैं एवं अन्य सभाओं में भी इसका कार्य प्रगति पर है।

उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने कहा कि इस शताब्दी वर्ष में 11 लाख रुपये के 101 स्वागत समिति सदस्य बनाने का लक्ष्य पूरा कर लिया गया है। तुलसी शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष के अवसर पर 100 तेरापंथ भवन बनाने के संदर्भ में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

महासभा के प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने प्रतिनिधि सम्मेलन में समागत प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी एक महान रचनाकार एवं युग निर्माता थे। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष हमारे सामने है। युगप्रधान, राष्ट्रसंत, गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष राष्ट्र के लिए पर्व बन जाए, भावी संतति उनके मार्ग का

अनुसरण करती रहे, ऐसा सलक्ष्य कार्य करना है जिससे कि यह समारोह पूरे राष्ट्र के लिए अनुकरणीय बन जाए। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संदर्भ में उन्होंने कहा कि इस शताब्दी वर्ष समारोह के लोगो का अनावरण राष्ट्रपति द्वारा किया गया। व्यापक स्तर पर कार्य करने का लक्ष्य रखते हुए 80-90 महान विभूतियों से संपर्क स्थापित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्य शासकीय कार्यों के अंतर्गत किये गये कार्य एवं करणीय कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान किया।

महासभा शताब्दी वर्ष के संदर्भ प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ धर्मसंघ की सबसे पुरानी एवं सर्वोच्च संस्था है। स्थापना से शताब्दी वर्ष तक की यात्रा में उसके साथ अनेकानेक महिमा-मंडित पृष्ठ जुड़े हुए हैं। इसका 100 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। कई महान विभूतियों के परिश्रम, समर्पण, कष्ट सहन एवं त्याग से यह संस्था बनी और अब यह शताब्दी वर्ष मना रही है जो पूरे धर्मसंघ के लिए गौरव का विषय है। हमें उन विभूतियों का सम्मान करना है।

सभा भवन निर्माण योजना के संदर्भ में प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों एवं सुदूर क्षेत्रों में 100 तेरापंथ भवन का निर्माण प्रस्तावित है। तेरापंथ भवन निर्माण योजना की विस्तृत रूपरेखा की जानकारी उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को प्रदान किया।

महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने सभाओं के सम्यक संचालन पर पावर प्वायंट के माध्यम से अपनी प्रस्तुति प्रदान करते हुए बताया कि आज पूरे देश व विदेश में लगभग 522 तेरापंथी सभाएं धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक, साहित्यिक और मानव सेवा के क्षेत्र में सम्पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव से कार्य कर रही है। अणुव्रत, अहिंसा यात्रा, संस्कार निर्माण आदि के कार्यक्रमों को संचालित कर इन सभाओं ने देश के हर वर्ग के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। तेरापंथी सभाओं के विकास के मूल आधार हैं उसकी कुशल संचालन पद्धति, गुरुवर के प्रति असीम निष्ठा, चारित्रात्माओं के प्रति असीम सेवा भावना और जनहितकारी कार्यो के प्रति जागरूकता। उन्होंने कहा कि सभाएँ अपने उद्देश्यों की पूर्ति तभी कर सकती है जब वे सम्यक रूप से संचालित हो। सभाओं की सफलता कुशल नेतृत्व पर निर्भर करती है जिसके लिए दूरदृष्टिसम्पन्न, संगठन व उसके सिद्धान्तों के प्रति आस्था, सौहार्द और समन्वय की भावना, टीमवर्क, कुशल संप्रेषण, सहकर्मियों के साथ सद्भाव के गुण का होना आवश्यक है।

महासभा के उपाध्यक्ष व सहभागिता योजना के राष्ट्रीय प्रभारी किशनलाल डागलिया ने सहभागिता योजना के उद्देश्यों एवं इसके प्रारूप की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि इस योजना में एकत्रित राशि का उपयोग सभा संपोषण के साथ-साथ संस्कार निर्माण की विविध गतिविधियों तथा धर्मसंघ की विभिन्न प्रवृत्तियों के सम्यक संचालन हेतु किया जायेगा।

महासभा के महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया ने महासभा की गति-प्रगति की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि महासभा की स्थापना सन् 1913 में मुख्य रूप से **बाल दीक्षा** प्रकरण को लेकर की गयी। महासभा को इन 100 वर्षों में कई विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। बाल दीक्षा, भिक्षावृत्ति आदि के विरोध में प्रस्तुत प्रस्ताव एवं बिल का महासभा ने अपने बलबूते पर सबलता के साथ विरोध किया जिसके कारण ये विरोध अपनी चरम परिणति पर नहीं पहुँच पाई। उन्होंने कहा कि महासभा द्वारा वर्तमान में ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर, मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना, महासभा शिक्षा सहयोग योजना, जैन भारती आदि का संचालन कर रही है। इसके अतिरिक्त महासभा के पास सहभागिता योजना, आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल निर्माण, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह, महासभा शताब्दी वर्ष जैसी कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं हैं जिनका संचालन महासभा द्वारा किया जा रहा है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी एवं महासभा शताब्दी वर्ष के अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में 100 तेरापंथ भवन निर्माण की योजना चल रही है। अनुशास्ता के केन्द्रीय सचिवालय के संचालन और व्यवस्था के नियोजन का दायित्व भी महासभा को प्रदान किया गया। कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठता हेतु प्रतिबद्धता, सुव्यवस्था, गुणवत्ता एवम् निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप कार्यप्रणाली के आधार पर कार्य करने पर महासभा को ISO प्रमाण पत्र प्राप्त है। महासभा की विकास यात्रा में यह एक मील का पत्थर है।

महासभा और सभाओं का पारस्परिक संबंध विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए महामंत्री ने कहा कि महासभा का सभाओं के साथ आपसी संपर्क का सबसे महत्वपूर्ण साधन है - संवाद जो फोन के माध्यम से, पत्राचार के माध्यम से, संगठन यात्रा के दौरान आपसी विचार-विमर्श के द्वारा समाचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है। सभाओं को चाहिये कि समर्पित कार्यकर्ताओं के बारे में आवश्यक जानकारी महासभा को अवश्य प्रेषित करें। कोई समस्या उत्पन्न हो जाए तो यथाशीघ्र उसे स्थानीय स्तर पर समाहित करने का प्रयत्न करें अन्यथा अविलंब महासभा कार्यालय को सूचित करें ताकि विवाद ज्यादा लंबा न चले। महासभा के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्तागण संगठन यात्रा के द्वारा सभाओं की सार-संभाल करते हैं एवं उन्हें संस्था संचालन के बारे में, महासभा की गतिविधियों के बारे में एवं संस्था संचालन संबंधी अन्य जानकारी उन्हें प्रदान करते हैं। उपस्थित सभाओं के प्रतिनिधिगण से उन्होंने आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में सभा द्वारा किये जा रहे कार्य के बारे में, गतिविधियों के बारे में एवं अन्य जो भी जानकारी हो उसकी सूचना महासभा को अवश्य प्रेषित करें ताकि उसके बारे में समय पर चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति हो और बिना किसी विलंब के उसकी उपयोगिता सामने आए और तेरापंथी सभा तथा महासभा दोनों का कर्तृत्व सामने आए।

जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़ ने पावर प्वायंट के माध्यम से जय तुलसी फाउण्डेशन की गतिविधियों, आर्थिक सहायता प्राप्त परिवारों की संख्या आदि के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने सभा प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि उनके क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, संपोषण के लिए यदि कोई परिवार जरूरतमंद है तो उसकी जानकारी जय तुलसी फाउण्डेशन को अवश्य दें ताकि हम उन्हें आवश्यक सुविधाएं मुहैया करा सकें।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने ज्ञानशाला की उपयोगिता, उसके प्रभाव तथा बच्चों में संस्कार निर्माण में उसके योगदान का उल्लेख किया।

उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालमचंद नौलखा ने कहा कि उपासक और ज्ञानशाला संघीय प्रवृत्ति, घरेलू प्रवृत्ति है जो धर्मसंघ की प्रवृत्तियों के जड़ों को मजबूती प्रदान करनेवाली प्रवृत्ति है और धर्मसंघ की प्रवृत्ति को सुरक्षा प्रदान करनेवाली प्रवृत्ति है। इसका दायित्व प्रारंभ से ही महासभा को प्राप्त है और महासभा कुशलतापूर्वक इसका निर्वहन कर रही है। उन्होंने उपासकों की संख्या में निरंतर हो रही वृद्धि को समाज के आध्यात्मिक विकास के लिए सराहनीय कदम बताया।

महासभा के उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सहभागिता प्रभारी श्री किशनलाल डागलिया ने सहभागिता योजना के उद्देश्यों एवं इसके प्रारूप की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि इस योजना में एकत्रित राशि का उपयोग सभा संपोषण के साथ-साथ संस्कार निर्माण की विविध गतिविधियों तथा धर्मसंघ की विभिन्न प्रवृत्तियों के सम्यक संचालन हेतु किया जाता है। उन्होंने कहा कि इस योजना का उद्देश्य मात्र अर्थ संग्रह नहीं है बल्कि प्रत्येक परिवारों तक पहुँचकर उनकी सार-संभाल करनी है। हम सब मिलकर संघीय गतिविधियों को ऊंचाइयों तक ले जाएं, यही इस योजना का परम लक्ष्य है। उन्होंने उपस्थित सभा प्रतिनिधियों से आह्वान करते हुए कहा कि समाज के हर वर्ग के लोगों ने यह माना है कि समाज, राष्ट्र या फिर इस जगत से हम जो कुछ प्राप्त करते हैं इसका कुछ अंश उसे पुनः लौटाना ही समाज धर्म है। अतः सबको इस महत्वपूर्ण उपक्रम से जुड़ना आज सर्वाधिक अपेक्षित है।

श्री डागलिया ने इस योजना का प्रारूप प्रस्तुत करते हुए बताया कि संपूर्ण राशि का संग्रह महासभा के अंतर्गत स्थापित कोष में हो जिसका 50 प्रतिशत स्थानीय संस्थाओं को सभा संचालन एवं संघीय प्रवृत्तियों विशेषतः उपासना कक्ष, ज्ञानशाला, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, स्थानीय स्तर पर चिकित्सा सहयोग एवं छात्रवृत्ति आदि कार्यक्रमों के संचालन हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। बाकी राशि में से 15 प्रतिशत राशि जय तुलसी फाउण्डेशन को प्रदान किया जाएगा।

महासभा के सहमंत्री श्री बजरंग सेठिया ने संविधान पर अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि सभी सभाएं महासभा द्वारा सभाओं के लिए निर्धारित संविधान को स्वीकृत करके एक प्रति पर हस्ताक्षर करके महासभा कार्यालय को अवश्य भिजवाएं। उन्होंने कहा कि काफी सभाओं से संविधान की हस्ताक्षरित प्रति प्राप्त हो चुकी है परंतु अभी भी कई सभाओं से यह कार्य होना अवशिष्ट है। अतः सभाओं के प्रतिनिधि इसे अत्यावश्यक

समझते हुए इस कार्य को शीघ्रता से संपादित करें। श्री बजरंग जी सेठिया ने संविधान की एकरुपता के साथ ही सभी सभाओं में चुनाव करवाने संबंधी जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि जिन सभाओं में चुनाव होना अवशिष्ट है वहाँ निर्धारित अवधि में चुनाव निश्चित रूप से संपन्न कर लिया जाना चाहिये।

महासभा के उपाध्यक्ष एवं समस्या समाधान प्रकोष्ठ के संयोजक श्री विनोद बैद ने प्रतिनिधियों का ध्यान समाज के समक्ष उत्पन्न कुछ समस्याओं की ओर आकर्षित करते हुए आह्वान किया कि वे उनके समाधान के प्रति जागरूकता दिखाएँ। उन्होंने कहा कि संगठन को सुदृढ़ करने के लिए संस्थाओं को युगीन अपेक्षाओं के अनुरूप संचालित करना होगा क्योंकि कोई भी संस्था तभी सुदृढ़ हो सकती है जब उसका संगठन सुदृढ़ हो। संगठन हमारे धर्मसंघ की आधारशिला है। अपनी कार्य प्रणाली में निरंतर सुधार करना होगा और संघीय अनुशासन का ध्यान रखते हुए आपसी सौहार्द एवं समन्वय की भावना को विकसित करना होगा। यह जरूरी है कि सभाओं का चुनाव समयबद्ध हो, संविधान के प्रति निष्ठा और अनुशासन के प्रति जागरूकता हो। सभाओं का दायित्व है कि वे अन्य स्थानीय संघीय संस्थाओं के साथ तालमेल रखते हुए कार्यक्रमों का समयबद्ध आयोजन करें। ज्ञानशाला का निरंतर संचालन, उपासक श्रेणी के कार्यों में सहयोग, चारित्रात्माओं की पदयात्रा की समुचित व्यवस्था, श्रावक-श्राविका समाज की सार-संभाल, उनकी स्थितियों की जानकारी और समस्याओं के समाधान में सहयोग, सामुदायिक चेतना के विकास में पूज्य प्रवरों के निर्देशानुसार कार्यों का संचालन आदि प्रमुख कार्य हैं, जिन्हें सभाओं को सुनिश्चित करना अपेक्षित है।

महासभा के सहमंत्री श्री जी. भूपेन्द्र मुथा ने राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर एवं अभ्युदय के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अभ्युदय प्रतिमाह प्रकाशित होनेवाली महासभा की पत्रिका है जिसका संपादन कार्य श्रीमती वीणा बैद द्वारा कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। उन्होंने उपस्थित सभा प्रतिनिधियों को इस पत्रिका के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि इसे केवल अपने कार्यालय तक सीमित नहीं रखें और न ही आजीवन सदस्य इस पत्रिका को अपने कमरे तक सीमित रखें। इसे अवश्य पढ़ें क्योंकि इसमें गुरुवाणी को सारगर्भित करके गुरुवाणी कॉलम के अंतर्गत प्रकाशित किया जाता है। अमृत पुरुष अमृत वर्षा कॉलम अभ्युदय का महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान करनेवाला है। उन्होंने कहा कि इस बार का अंक महासभा से संबंधित है। इसमें 100 वर्षों के इतिहास को संक्षित रूप में आपके सामने प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर के बारे में उन्होंने कहा कि विगत 3 वर्षों से महासभा के तत्वावधान में राष्ट्रीय संस्कार निर्माण का व्यवस्थित रूप से संचालन हो रहा है। इस शिविर में देश के कोने-कोने से नौनिहाल बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपने जीवन को अध्यात्म की नयी ऊँचाइयों को प्राप्त करने के लिए अग्रसर रहते हैं। इस वर्ष 6 अक्टूबर से 12 अक्टूबर, 2013 को लाडनूं में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के सान्निध्य में राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन निर्धारित है। आगामी शिविर में सम्मिलित होने के लिए उन्होंने यथाशीघ्र बच्चों का रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु उपस्थित सदस्यों से आह्वान किया।

जैन भारती के संपादक डॉ. शान्ता जैन ने जैन भारती के संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस वर्ष इस पत्रिका के संपादकीय दायित्व का भार ग्रहण करने के उपरान्त हमारा यह प्रयास रहा है कि इसकी गुणवत्ता में और अधिक निखार आये एवं ग्राहक संख्या में भी वृद्धि हो। इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। जैन भारती पत्रिका प्रत्येक परिवार तक पहुँचे इस हेतु हमें सम्मिलित रूप में प्रयास करना होगा।

महासभा के उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधि सम्मेलन के संयोजक श्री विनोद बैद ने आचार्यप्रवर, साध्वीप्रमुखाश्री, मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी सहित सभी चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने सम्मेलन के आयोजन में महासभा के संगठन प्रभारी श्री तुलसी कुमार दुगड़, कार्यकारिणी सदस्य श्री मनोज सिंघी, श्री जितेन्द्र सेठिया, श्री रोशनलाल डागलिया, सहभागिता प्रभारी श्री मानमल सेठिया एवं उनकी टीम, उपासक श्री महेन्द्र बैद के अतिरिक्त चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र घोषल, मंत्री श्री भागचन्द बरड़िया, तेरापंथी सभा-लाडनूं के अध्यक्ष श्री भंवरलाल खटेड़ एवं अन्य कार्यकर्ताओं के साथ-साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट किया।

सम्मेलन के अलग-अलग सत्रों का संयोजन महासभा के सहमंत्री श्री जी. भूपेन्द्र मुथा, उपाध्यक्ष श्री विमल सुराणा एवं श्री विनोद बैद एवं कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ ने सफलतापूर्वक किया।

विभिन्न सत्रों में आभार ज्ञापन महासभा के उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार धाड़ीवाल, श्री सुकनराज परमार एवं श्री विनोद बैद न्यासी श्री बिमल कुमार नाहटा तथा श्री पन्नालाल बैद ने किया।